

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Subsidiary) Com 100

by Ravishankar Kumar

① 'हमारा प्यारा भारत वर्ष' शीर्षक कविता का भावार्थ स्पष्ट करें।

उत्तर - 'हमारा प्यारा भारत वर्ष' शीर्षक कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कंदगुप्त' से ली गयी है। इस कविता में कवि ने भारत की महिमा का वर्णन किया है।

प्रस्तुत कविता में जयशंकर प्रसाद ने भारत को हिमालय का आंगन कहा है। कवि का मानना है कि हमारा देश कितना महान है जिसकी रक्षा के लिए इसकी बगल में हिमालय पहाड़ खड़ा है। हमारा देश वह देश है जहाँ सबसे पहले सूरज की किरणें आती हैं। कवि का मानना है कि जब सबसे पहले हमारे देश में सूर्योदय हुआ तब हम भारतवासी जागे। हम मारलीयों के जागने के बाद पूरे विश्व में पूरी संस्कृति में खुशियों की लहर दौड़ पड़ी। हमने पूरे विश्व को राह दिखाने का काम किया। जिस मार्ग पर हम भारतवासी चले, उसी मार्ग पर पूरी दुनिया चली। हमारे देश में ऐसे-ऐसे महान सम्राटों का जन्म हुआ, जिन्होंने अपनी पुजा को कभी रौंद-बिलखते देखना नहीं चाहा। यहाँ के सम्राटों ने मिथुन बनकर अपना जीवन व्यतीत किया और अपनी सारी संपत्ति पुजा के हित में अर्पित कर दिया।

हमारा प्यारा भारत वर्ष, शीर्षक कविता
 में कवि जयशंकर प्रसाद ने उन महान त्रि-
 दचीचि को याद किया है जिन्होंने राष्ट्रों
 को मारने के लिए अपना शरीर दान
 कर दिया। जब पता चला कि दचीचि
 के हड्डियों से बने हथियार से ही
 राक्षस का वध होगा, उसी समय दचीचि
 ने जगत के कल्याण के लिए अपना
 जीवन अर्पण कर दिया। यदि दुनिया
 को किसी ने शांति का संदेश दिया, तो
 वह हमारा भारत वर्ष ही है। कितना प्यारा
 हमारा भारत वर्ष है जहाँ एक और पूरी
 दुनिया एक-दूसरे को लूटने-व्रसीलने में
 लगी थी, वहीं यह जन-जन में
 शांति का संदेश दे रहा था। हमारे
 देश की संतान साधारण संतान नहीं
 है। इसकी सुजा में शक्ति है। संचय
 में दान है। यहाँ पर निम्न पंक्तियाँ
 प्रस्तुत हैं -

हमारे संचय में था दान,
 अलिखि थे सदा हमारे देव,
 कचन में सत्य हृदय में तेज,
 प्रतिज्ञा में रहती थी देव । ७

अर्थात् कितना प्यारा हमारा
 देश है जहाँ पर ऐसे-रुसे महा-
 पुरुष पैदा हुए, जो हमेशा सत्य
 बोलते थे। वे जो काम करने के
 लिए मन में ठान लेते थे, उसे पूरा
 कर दिखाते थे। कितना प्यारा हमारे
 भारत वर्ष है। इतना ही नहीं कवि
 का यह भी मानना है कि हमारे
 कुछ भी नहीं बदला है। हम जैसे
 पहले थे, वैसे अब भी हैं।